शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2012

सम्पादकीय.....

गॉड पार्टिकल और अध्यात्म

इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक और इस वर्ष की सबसे बड़ी खोज 'गॉड पार्टिकल' है। विज्ञान में खोज होते–होते आखिर एक कण पर टिक गयी है। इस नयी खोज से पूरी दुनिया चमत्कृत है। जेनेवा के निकट सर्न प्रयोगशाला में हिग्स कण को बनाने के लिए प्रत्येक सेकंड में एक अरब बार प्रोटान कणों को आपस में टकराया गया। वैज्ञानिक यह जानना चाहते हैं कि कण किस तरह से बनते हैं। वे यह भी देखना चाहते हैं कि ये कण दूसरे कणों में कितनी बार परिवर्तित होते हैं। यद्यपि इस कण की बात भारतीय वैज्ञानिक सत्येंद्रनाथ बोस ने कहीं थी, परंतु उनका शोध पत्र प्रकाशित नहीं हुआ था। बाद में पीटर हिग्स ने अपने साथियों के साथ काम करते हुए इस कॉस्मिक कण का नाम बोसोन रखा। इस गॉड पार्टिकल से ब्रह्मांड के रहस्यों को खोजने में मदद मिल सकती है। अभी तक आधुनिक विज्ञान की सारी खोजें भौतिकता को बढ़ाने वाली रही हैं। आज मनुष्य जीवन भौतिक रूप से बहुत समृद्ध दिखाई दे रहा है, परंतु उसका अध्यात्म के साथ तालमेल नहीं बैठ पाया है। एक तरह से कहा जाए तो वैज्ञानिक खोजों पर आधारित हमारा जीवन आध्यात्मिकता से विच्छिन्न है।

यदि हम वैज्ञानिक जीवन शैली अपनाएंगे तो वास्तव में सच्चे अध्यात्म को भी स्वीकार करेंगे और यदि हम आध्यात्मिक होंगे तो सच्चे वैज्ञानिक भी बनेंगे। आज विज्ञान के पीछे अध्यात्म एक तरह से घिसटते हुए चल रहा है। इसे हम विनोबा के शब्दों में कुछ इस तरह समझ सकते हैं कि हमारे आध्यात्मिक चिंतन में एक दोष रह गया है। महापुरुषों का दोष नहीं चिंतन का दोष है। बहुतों का ख्याल है कि अध्यात्म–ज्ञान पूर्णता को पहुंच गया है। अब उसमें किसी प्रकार की प्रगति की गुंजाइश नहीं है। वेदोत और संतो के अनुभवों में अध्यात्मशास्त्र पूर्ण हो गया है। लेकिन वैज्ञानिक हमेशा नम्रतापूर्वक कहते हैं कि विज्ञान कभी परिपूर्ण नहीं होता। वे कहते हैं कि उसकी प्रगति सिंधु में बिंदु के समान है।

विज्ञानवादी कहते हैं कि सृष्टि का ज्ञान अनंत है और उसका अंशमात्र ज्ञान ही हमारे हाथ लगा है। इससे उलट अध्यात्मवादी कहते हैं कि अध्यात्मज्ञान पूर्णता को पहुंचा है। उसके नीचे 'समाप्तम' की रेखा भी खींची गयी है। इसमें जोड़ने का कुछ अब बाकी नहीं रहा। इस प्रकार का कहना, एक बहुत बड़ी भूल है। जिस प्रकार विज्ञान का विकास हो रहा है, उसमें नयी–नयी खोजें हो रही हैं और आगे भी होती रहेंगी, उसी प्रकार अध्यात्म से भी खोजें होती रहेंगी और उसका भी विकास होता रहेगा। आज तक जो अध्यात्म–विद्या हमारे हाथ में आयी है, वह अंशमात्र है। अगर अध्यात्म में नयी–नयी खोजें करने का प्रयत्न नहीं होगा तो वह विद्या कुंठित हो जाएगी। हमारे देश में यही हुआ है। यह एक बहुत बड़ी न्यूनता रह गयी है। अनुभव के कितने ही स्थान अभी शेष हैं, जहां पहुंचना है। फिर भी, उस ज्ञान को, उस विद्या को परिपूर्ण माना गया। यह एक बहुत बड़ा दोष रह गया है। विज्ञान में दोष रहते हैं, परंतु अनुभव से उनको सुधार लिया जाता है। यही बात अध्यात्म को भी लागू होती है। जैसे विज्ञान में आधारभूत सार्वत्रिक सत्य होता है, जिस पर पूरी प्रौद्योगिकी टिकी होती है, ऐसे ही अध्यात्म में भी सार्वत्रिक सत्य होता है, जिस पर पूरी समाज व्यवस्था टिकी होनी चाहिए। परंतु वैसी समाज व्यवस्था न होने से ही मनुष्य जीवन में संघर्ष दिखाई देता है।

ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2012

आज के विकसित अर्थशास्त्र को राष्ट्रीय अर्थशास्त्र कहते हैं, उसका अर्थ है दूसरे राष्ट्र का विरोध करके अपने राष्ट्र को संपन्न करना। ऐसा समाज, वैज्ञानिक चकाचौंध से तो जगमगाता रहेगा, परंतु अध्यात्म विद्या के अभाव में आंतरिक रूप से अंधकार में रहेगा। विज्ञान युग में 'मेरा स्वार्थ', 'मेरा सुख' चलेगा नहीं। विनोबा जी आध्यात्मिक विकास की बाधा बताते हुए लिखते हैं कि यहां 'मैं को खत्म करने की तरफ ध्यान नहीं गया। 'मैं' को कैसे काटें ? 'मैं' को हम से काटना होगा। 'हमारी साधना', 'हमारी मुक्ति' होगी, तभी काम सरल होगा। उससे व्यक्ति और समाज दोनों का उत्थान एकदम सधेगा और वही सच्चे अर्थों में साधना होगी। इस 'गॉड पार्टिकल' से ऐसा संभव होगा अथवा नहीं, यह तो भविष्य में ही निर्धारित होगा। शब्द–ब्रह्म के सुधी पाठकों और शोधार्थियों को नये वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। – **डॉ.पुष्पेंद्र दुबे**